# मारवाड़ का इतिहास

- क्षेत्र – जोधपुर + बाड़मेर + नागौर + जालोर + पाली

**● राठौड़ों की उत्पत्ति –**

- मुहणौत नैणसी + जोधपुर राज्य की ख्यात + पृथ्वीराज रासो के अनुसार जयचंद गहढवाल के पौत्र राव सीहा ने 1240 ई में कन्नौज से आकर राठौड़ वंश की स्थापना की
- पंडित गौरीशंकर हीराचंद ओझा के अनुसार बदायूँ से आकर राव सीहा ने राठौड़ वंश की स्थापना की
- राठौड़ स्वंय को सूर्यवंशी मानते हैं
- राठौड शब्द संस्कृत के राष्ट्रकूट से बना है जो दक्षिण भारत की एक जाति थी
- कर्नल जेम्स टॉड ने कहा – मुगल बादशाह अपनी विजयों में से आधी के लिए राठौडो की 1 लाख तलवारों के अहसानमंद थे
- राठौडो की कुल देवी – नागणेची माता
- आराध्य देवी / ईष्ट देवी – चामुंडा माता (मेहरानगढ़ दुर्ग)

**❖ राव सीहा –**

- मारवाड़ के राठौड वंश का संस्थापक / आदिपुरुष
- पाली के पालीवाल ब्राह्मणों की रक्षा के लिए मारवाड आये क्योंकि मेर पालीवालो से लूटपाट करते थे
- राव सीहा + पालीवाल ब्राह्मणों व मुस्लिम आक्रांताओं के बीच लड़े गये युद्ध में 1 लाख लोग मारे गए , इस युद्ध को लाख झंवर कहा जाता है
- राव सीहा का स्मारक – बीठू (पाली)

**❖ राव आस्थान –**

- राव सीहा के पुत्र
- खेड (बालोतरा) पर अधिकार कर रणछोड़राय मंदिर का निर्माण कराया
- जलालुद्दीन खिलजी की सेना से युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए

**❖ राव धूहड –**

- कर्नाटक से अपनी कुलदेवी चक्रेश्वरी (नागणेची माता) की मूर्ति लाकर नगाणा गाँव (बालोतरा) में स्थापित कराई

**❖ मल्लीनाथ जी –**

- बाड़मेर के मालाणी क्षेत्र का नाम इन्हीं के नाम पर पड़ा
- राजस्थान के लोक देवता हैं जिनका मंदिर तिलवाड़ा (बालोतरा) में है

**❖ राव चूण्डा –**

- वीरमदेव के पुत्र थे
- प्रतिहार वंश की ईन्दा शाखा ने अपनी राजकुमारी की शादी राव चूण्डा के साथ कर दी तथा मंडोर दहेज में दे दिया
- राव चूण्डा ने अपनी राजधानी मंडोर (जोधपुर) को बनाया

**नोट – मंडोर का प्राचीन नाम – माण्डवपुर**

- मारवाड़ के राठौड़ वंश का वास्तविक संस्थापक
- मारवाड़ में सामंतशाही / नौकरशाही की शुरुआत की
- राव चूण्डा ने अपनी रानी किशोर कंवरी के प्रभाव में छोटे बेटे राव कान्हा को राजा बना दिया

बड़े पुत्र राव रणमल ने अपनी बहन हंसाबाई का विवाह राणा लाखा के साथ इस शर्त पर किया कि इनसे उत्पन्न पुत्र ही मेवाड़ का शासक बनेगा, राव रणमल मेवाड में रहकर राणा मोकल के संरक्षक बने लेकिन रणमल ने राणा चूण्डा के भाई राघवदेव की हत्या करवा दी तब महाराणा कुम्भा ने रणमल की प्रेमिका भारमली की सहायता से रणमल की हत्या करवा दी

**❖ राव जोधा (1438 – 1489 ई) –**

- 1438 में जब चित्तौड़ में इनके पिता रणमल की हत्या हुई तब जोधा मेवाड से अपने साथियो के साथ मारवाड़ की तरफ भागा, हड़बूजी के आशीर्वाद से राव जोधा ने अहाडा हिगोंला को पराजित कर मंडोर दुर्ग पर अधिकार कर लिया

**● आवल बावल की संधि – 1453 ई**

- हंसाबाई की मध्यस्थता से मेवाड़ (महाराणा कुंभा) व मारवाड़ (राव जोधा) की सीमा का निर्धारण सोजत (पाली) में किया गया
- राव जोधा ने अपनी पुत्री श्रृंगार देवी का विवाह महाराणा कुम्भा के पुत्र रायमल से कर दिया
- राव जोधा ने 12 मई 1459 को मेहरानगढ़ दुर्ग (नींव करणी माता ने रखी) बनाकर जोधपुर शहर बसाया
- राव जोधा के दूसरे पुत्र राव बीका ने बीकानेर बसाया
- राव जोधा के पुत्र राव दूदा ने मेड़ता बसाया व राव जोधा के पुत्र करमसीजी के वंशज करमसोत राठौड़ कहलाये
- राव जोधा की रानी जसमादे ने जोधपुर में राणीसर तालाब का निर्माण कराया व अपनी माता कोडमदे के नाम पर जोधा ने कोडमदेसर तालाब बनाया
- राव जोधा ने दिल्ली शासक बहलोल लोदी को हराया
- पंडित गौरीशंकर हीराचंद ओझा के अनुसार राव जोधा मारवाड़ का प्रथम प्रतापी राजा था

## ❖ राव सातलदेव –

- अजमेर के सूबेदार मल्लू खाँ के सेनापति घूडले खाँ ने मारवाड़ में गणगौर की पूजा कर रही 140 कन्याओं का अपहरण कर लिया
- राव सातलदेव ने घूडले खाँ का सर काट कर तीरो से छिद्रित कर कन्याओं को दे दिया

## ❖ राव गांगा राठौड़ –

- खानवा के युद्ध (1527 ई) में गांगा ने अपने पुत्र मालदेव के नेतृत्व में 4000 की सेना भेजकर राणा सांगा की मदद की
- जोधपुर में गांगालाव तालाब, गांगा की बावड़ी बनाई
- राव मालदेव (मारवाड़ का पितृहंता) ने इनकी हत्या कर दी

## ❖ राव मालदेव (1532 – 1562 ई)

- पिता – गांगा राठौड
- माता – पदमा (सिरोही के जगमाल देवड़ा की पुत्री)
- राज्याभिषेक – सोजत (पाली)

### ● उपनाम –

- 52 युद्ध, 58 परगनो का विजेता
- फारसी इतिहासकार अबुल फजल, निजामुद्दीन, बदायूंनी ने हशमत वाला शासक कहा है
- फरिस्ता ने हिंदुस्तान का सबसे शक्तिशाली शासक कहा
- बदायूनी ने भारत का महान पुरुषार्थी राजकुमार कहा
- राव मालदेव ने मालकोट दुर्ग–मेड़ता, पोकरण दुर्ग, सोजत दुर्ग (पाली), रीया दुर्ग (नागौर) का निर्माण कराया

### ● हीराबाडी (नागौर) का युद्ध – 1533 ई

- नागौर के शासक दौलत खाँ ने मेडता पर अधिकार करने का प्रयत्न किया तो मालदेव ने दौलत खाँ को हराकर नागौर पर अधिकार किया

### ● पाहेबा/साहेबा का युद्ध – 1542 ई

- राव मालदेव व राव जैतसी (बीकानेर) के मध्य हुआ
- राव जैतसी मारा गया, राव जैतसी का पुत्र कल्याणमल शेरशाह सूरी के दरबार में सहायता के लिए चला गया
- मालदेव ने बीकानेर का सांमत कूम्पा को बना दिया

### ● वीरमदेव पर आक्रमण –

- मालदेव व वीरमदेव के मध्य दरियाजोश हाथी को लेकर विवाद था, मालदेव ने मेड़ता पर अधिकार कर लिया
- मेडता के वीरमदेव भी शेरशाह सूरी के पास चले गये

### ● राव मालदेव – हुमायूं

- मालदेव शेरशाह सूरी के खिलाफ हुमायूं की मदद करना चाहता था लेकिन हुमायूं ने मालदेव पर भरोसा नहीं किया

### ● गिरी सुमेल युद्ध ( जैतारण युद्ध – पाली )

- 5 जनवरी 1544 को राव मालदेव+जेता–कूंपा (मालदेव के सेनापति) **v/s** शेरशाह सूरी + कल्याणमल (बीकानेर) + वीरमदेव (मेड़ता) के मध्य हुवा लेकिन शेरशाह सूरी की कूटनीति के कारण राव मालदेव वापस जोधपुर चला गया
- युद्ध में जैता व कूंपा ने मिलकर शेरशाह सूरी की सेना का सामना किया और वीरगति को प्राप्त हुए
- शेरशाह सूरी युद्ध हारने वाला था लेकिन उसका सेनापति जलाल खा जलवानी कुछ सेना लेकर आ गया और शेरशाह सूरी युद्ध जीत गया
- युद्ध जीतने के बाद शेरशाह सूरी ने कहा – मुट्ठी भर बाजरे के लिए मैं हिंदुस्तान की बादशाहत खो देता
- इस युद्ध का वर्णन अब्बास खाँ सरवानी ने अपनी पुस्तक 'तारीख – ए – शेरशाही' में किया है

**नोट – तारीख ए फिरोजशाही के लेखक – जियाउद्दीन बरनी है**

- शेरशाह सूरी ने जोधपुर दुर्ग पर अधिकार कर दुर्ग में शेरशाही मस्जिद का निर्माण कराया व दुर्ग का किलेदार खवास खाँ को बनाया
- मालदेव सिवाणा (मारवाड़ शासकों की शरणस्थली) चले गये
- शेरशाह सूरी ने वीरमदेव को मेड़ता व कल्याणमल को बीकानेर दुर्ग सौंप दिया
- 1545 में कालिन्जर दुर्ग अभियान में शेरशाह सूरी की मृत्यु के बाद मालदेव ने पुनः जोधपुर दुर्ग पर अधिकार कर लिया

### ● हरमाड़ा का युद्ध – 1557 ई

- राव मालदेव + अजमेर के सूबेदार हाजी खाँ **v/s** महाराणा उदयसिंह के मध्य हुवा जिसमें राव मालदेव की विजय हुई

### ● रूठी रानी –

- राव मालदेव की शादी जैसलमेर शासक लूणकरण भाटी की पुत्री मानमती उमादे के साथ हुई थी
- शादी के दिन मानमती उमादे मालदेव से नाराज होकर अजमेर के तारागढ़ दुर्ग में चली गई व इतिहास में रूठी रानी के नाम से प्रसिद्ध हुई
- राव मालदेव की अन्य रानी झाली रानी स्वरूपदे ने मंडोर के पास 'बहूजी रो तालाब' का निर्माण कराया था

### ● दरबारी विद्वान – ग्रंथ

- आशानंद जी – बाघा भारमली रा दुहा
- ईसरदास जी – हाला झाला री कुंडलिया (सूर सतसई)

## ❖ राव चंद्रसेन (1562 – 1581) –

- जन्म – 16 जुलाई 1541 ई
- राव मालदेव का बड़ा पुत्र राम था दूसरा पुत्र उदयसिंह व तीसरा पुत्र राव चंद्रसेन था
- झाली रानी स्वरूपदे ने अपने पुत्र राव चंद्रसेन को शासक बनवा दिया

● उपनाम –

- मारवाड़ का प्रताप (विश्वेश्वर नाथ रेऊ ने कहा)
- प्रताप का अग्रगामी / प्रताप का पथ–प्रदर्शक
- भूला बिसरा राजा

● लोहावट का युद्ध – 1563

- राव चंद्रसेन व इनके भाई उदयसिंह के बीच हुआ
- राव चंद्रसेन विजयी रहे
- 1564 में बड़ा भाई राम अकबर के दरबार में जाकर राव चंद्रसेन के विरूद्ध सहायता मांगता है तो अकबर ने अजमेर के सूबेदार हुसैन कुली खां को मेहरानगढ़ दुर्ग पर अधिकार करने के लिए भेजा, इसने मेहरानगढ़ दुर्ग पर अधिकार कर लिया
- राव चंद्रसेन भाद्राजूण (जालौर) चला गया

● नागौर दरबार – 1570 ई

- 1570 ई में अकबर ने नागौर में नागौर दरबार लगाया
- अकाल राहत कार्य के लिए अकबर ने नागौर में शुक्र तालाब का निर्माण कराया
- बीकानेर के कल्याणमल, जैसलमेर के हरराय भाटी नागौर दरबार में जाकर अकबर की अधीनता स्वीकार कर लेते है
- राव चंद्रसेन नागौर दरबार में गये थे लेकिन वापस आ गये

नोट – राव चंद्रसेन ने भाद्राजूण में रहकर मुगलों से संघर्ष के लिए अपनी सेना को संगठित किया

- 1572 में अकबर ने बीकानेर शासक रायसिंह को मेहरानगढ़ दुर्ग का किलेदार बनाया
- 1574 में रायसिंह ने सिवाणा दुर्ग पर आक्रमण किया
- राव चंद्रसेन सारण की पहाड़ियां (पाली) में सचियाय नामक स्थान पर चले गये जहां 1581 में इनकी मृत्यु हो गई
- राव चंद्रसेन का स्मारक – सचियाय (पाली)
- धन की कमी के कारण राव चंद्रसेन ने महाजन वर्ग से लूट की थी इसलिए राव चंद्रसेन आम जनता में अलोकप्रिय हो गये अकबर ने चंद्रसेन की मृत्यु के बाद मारवाड़ को 1581– 1583 तक खालसा (मुगलो के अधीन) घोषित कर दिया

## ❖ मोटा राजा उदयसिंह (1583 – 1595) –

- उपाधि – मोटा राजा (अकबर ने दी)
- मारवाड़ का प्रथम शासक जिसने मुगलों की अधीनता स्वीकार की और अपनी बेटी जोधाबाई / जगत गुसाई की शादी सलीम / जहांगीर से कर दी इनसे खुर्रम / शाहजहां का जन्म हुआ
- 1589 में अकबर ने सिवाणा पर आक्रमण करने के लिए मोटा राजा उदयसिंह को भेजा उस समय कल्ला रायमलोत के समय सिवाणा में दूसरा साका हुआ प्रथम - 1308
- कल्ला रायमलोत की हाड़ी रानी भान कंवर ने जौहर किया व कल्ला रायमलोत ने केसरिया किया
- कल्ला रायमलोत ने पृथ्वीराज राठौड़ से अपने मरसिये जीते जी लिखवाए थे

## ❖ सवाई सूरसिंह –

- उपाधि – सवाई (अकबर ने दी)
- मारवाड़ के एकमात्र शासक जिनको सवाई की उपाधि मिली
- अकबर – जहांगीर की सेवा की

## ❖ महाराजा गजसिंह – थंमन = गज = हाथी

- उपाधि – दलथंमन (फौज रोकने वाला) – जहांगीर ने दी
- गजसिंह ने अपनी प्रेमिका अनारा बेगम के कहने पर छोटे बेटे जसवंत सिंह को मारवाड़ का शासक बना दिया व बड़े बेटे अमरसिंह को नागौर का शासक बना दिया

## ❖ राव अमरसिंह राठौड़

- अमरसिंह राठौड ने शाहजहाँ के मीर बख्शी सलावत खा की कटार से हत्या कर दी थी

● मतीरे की राड – 1644 ई गिरी सुमेल के 100 साल बाद

- बीकानेर का सिलवा गांव व नागौर का जाखणिया गांव में मतीरे की बेल को लेकर विवाद हुआ
- बीकानेर के कर्णसिंह व नागौर के अमरसिंह राठौड़ के मध्य युद्ध हुवा जिसमें बीकानेर की विजय हुई

## ❖ महाराजा जसवंत सिंह प्रथम (1638 – 1678 ई) –

- राज्याभिषेक – आगरा दुर्ग में शाहजहां ने किया व 4000 जात–सवार का मनसबदार बनाया
- कंधार अभियान के बाद शाहजहां ने मनसबदार की संख्या 6000 कर दी
- संरक्षक / प्रधानमंत्री – राजसिंह कूंपावत
- धरम्मत के युद्ध में महाराजा जसवंत सिंह ने दारा शिकोह का साथ दिया, युद्ध हारने के बाद जसवंत सिंह जोधपुर पहुंचे तो हाडी रानी जंसवतदे ने दुर्ग के दरवाजे बंद कर दिये
- सामूगढ युद्ध के बाद औरंगजेब के मुगल बादशाह बनते ही महाराजा जसवंत सिंह ने औरंगजेब की अधीनता स्वीकार की
- खजुआ (उत्तरप्रदेश) का युद्ध 1659 ई में औरंगजेब व शाहशुजा के मध्य लड़ा गया जिसमें औरंगजेब की जीत हुई

इस युद्ध में औरंगजेब का सेनापति जसवंत सिंह प्रथम था

- औरंगजेब ने जसवंतसिंह को शिवाजी के विरुद्ध दक्षिण भारत भेजा फिर इनको काबूल भेज दिया जहाँ जमरूद (काबुल – अफगानिस्तान) में इनकी मृत्यु हो गई
- महाराजा जसवंत सिंह की मृत्यु पर औरंगजेब ने कहा आज क्रूफ (धर्म विरोधी) का दरवाजा टूट गया है

● **पुस्तकें** – भाषा भूषण, आनंद विलास, चन्द्रप्रबोध नाटक, सिद्धांत सार, सिद्धांत बोध, अनुभव प्रकाश, अपरोक्ष सिद्धांत

- मुहणौत नैणसी जसवंतसिंह के दरबारी विद्वान थे

**नोट – मुंशी देवीप्रसाद ने मुहणौत नैणसी को राजपूताने का अबुल फजल कहा है**

- अन्य दरबारी विद्वान – दलपति मिश्र, नरहरि दास, नवीन कवि, बनारसीदास

● **स्थापत्य** –

- जसवंत सिंह प्रथम ने काबूल से अनार के पौधे लाकर जोधपुर के कागा के बाग में लगाये
- इनकी रानी अतिरंगदे ने जोधपुर में जान सागर तालाब बनाया जिसे शेखावत जी रो तालाब कहते हैं
- दूसरी रानी जसवंतदे ने जोधपुर में राई का बाग तथा कल्याण सागर तालाब बनाया

### ❖ वीर दुर्गादास राठौड़ –

- जन्म – सालवा (जोधपुर ग्रामीण)
- पिता – आसकरण

● **उपनाम** –

- कर्नल जेम्स टॉड ने राठौड़ो का यूलीसेस कहा
- मारवाड़ का उद्धारक
- मारवाड़ का अणबिंदिया मोती कहा

● **छतरी** – शिप्रा नदी किनारे (उज्जैन – मध्य प्रदेश)

- दुर्गादास राठौड़ ने अजित सिंह को शासक बनाने के लिए 30 वर्षों तक (1678–1708 ई) संघर्ष किया
- औरंगजेब के पुत्र अकबर द्वितीय ने नाडोल में अपने आपको भारत का शासक घोषित कर दिया, दुर्गादास राठौड ने अकबर द्वितीय को मराठा संरदार शम्भाजी के दरबार में पहुंचाया

### ❖ महाराजा अजीत सिंह –

- महाराजा जसवंतसिंह की मृत्यू के समय कोई उतराधिकारी नहीं था इसलिए औरगजेंब ने मारवाड को खालसा घोषित कर दिया बाद में जसवंत सिंह की गर्भवती रानी जादम ने अजित सिंह को जन्म दिया किंतु औरंगजेब अजीतसिंह को शासक नहीं बनाना चाहता था
- मुकुंददास खिंची, गौरा धाय के साथ मिलकर दुर्गादास राठौड़ ने अजीतसिंह को औरंगजेब के चुंगल से निकालकर सिरोही के कालिंद्री मंदिर में छुपाया था
- इस कार्य में मेवाड़ महाराणा राजसिंह ने बहुत सहायता की अजीतसिंह व दुर्गादास राठौड को शरण देकर केलवा की जागीर दी व रामपुरा का हाकीम नियुक्त किया
- गोराधाय (मारवाड़ की पन्नाधाय) ने अपने पुत्र का बलिदान देकर अजीत सिंह के प्राण बचाए
- औरंगजेब ने अजीत सिंह की जगह एक और बालक रखा जिसका नाम मोहम्मदी राज रख दिया
- देबारी समझौते के तहत अजीत सिंह ने शासक बनने के बाद वीर दुर्गादास राठौड़ को अपने राज्य से निकाल दिया
- पंडित गौरीशंकर हीरानंद ओझा ने अजीत सिंह को कान का कच्चा कहा
- अजीत सिंह ने अपनी पुत्री इंद्रकंवरी का विवाह मुगल बादशाह फर्रूखशियर के साथ किया था, इंद्रकंवरी मुगलों से शादी करने वाली राजपूताने की अंतिम राजकुमारी थी
- इंद्रकंवरी फर्रूखशियर की हत्या कर वापस जोधपुर आ गई बाद में अजीत सिंह ने इनका विवाह हिंदू युवक के साथ किया

● **पुस्तक** – गुण सागर, दुर्गापाठ भाषा, निर्वाण दूहा, अजीत चरित्र, गज उद्धार (भागवत कथा पर आधारित)

- अजीत सिंह के बड़े बेटे अभयसिंह के कहने पर छोटे पुत्र बख्तसिंह ने अजीत सिंह की हत्या की कर दी थी
- अजीतसिंह की मृत्यु पर इनके साथ मोर बंदर जलकर मरे थे

### ❖ महाराजा अभयसिंह –

- इनके दरबारी कवि करणीदान ने सूरज प्रकाश ग्रंथ की रचना की, वीरभाण ने राजरूपक ग्रंथ की, जगजीवन भट्ट ने अभयोदय ग्रंथ की रचना की
- राजरूपक ग्रंथ में 1787 में गुजरात सूबेदार शेर बुलंद खा व अभयसिंह की लड़ाई का वर्णन है जिसमें अभयसिंह विजयी रहे

● **खेजड़ली घटना – 12 सितम्बर 1730 ई**

- खेजड़ली गांव (जोधपुर ग्रामीण) में भाद्रपद शुक्ल दशमी को महाराजा अभयसिंह ने अपने हाकिम गिरधारीदास भंडारी को खेजडी काटने का आदेश दिया
- खेजड़ी पेड़ों को बचाने के लिए अमृता देवी विश्नोई (रामो विश्नोई की पत्नी), इनकी 3 पुत्रियों सहित 363 लोगों ने पेड़ों से चिपककर जान दे दी

● **अमृता देवी स्मृति वानिकी पुरस्कार – 1994 में शुरू**

- **पर्यावरण संरक्षण के लिए राजस्थान का सबसे बडा पुरस्कार**

### ❖ महाराजा विजयसिंह –

- मुगल बादशाह शाहआलम द्वितीय से अनुमति प्राप्त कर मारवाड में टकसाल खोलकर विजयशाही सिक्के चलाये
- इन पर इनकी पासवान गुलाबराय का अत्यधिक प्रभाव था
- वीर विनोद के लेखक श्यामलदास ने विजयसिंह को जहांगीर का नमूना व गुलाबराय को मारवाड़ की नूरजहां कहा

### ❖ भीमसिंह –

- कृष्णा कुमारी की प्रथम सगाई इन्हीं के साथ हुई

### ❖ महाराजा मानसिंह (1803 – 1843 ई) –

- भीमसिंह के बाद इनका भाई मानसिंह शासक बना
- नाथ संप्रदाय के आयस देवनाथ ने मानसिंह के राजा बनने की भविष्यवाणी की थी, शासक बनते ही मानसिंह ने आयस देवनाथ को अपना गुरु बनाया और जोधपुर में नाथ संप्रदाय के महामंदिर का निर्माण कराया
- मानसिंह नाथ सम्प्रदाय के अनुयायी थे इसलिए इन्हें सन्यासी राजा भी कहा जाता है
- मेहरानगढ़ दुर्ग में मानप्रकाश पुस्तकालय की स्थापना की
- 1818 में ईस्ट इंडिया कंपनी से संधि की
- दरबारी विद्वान बाकिंदास थे जिन्होंने बांकीदास री ख्यात लिखी व आयो अंग्रेज मुल्क रै ऊपर (गीत) लिखा

### ❖ महाराजा तख्त सिंह –

- 1857 की क्रांति के समय शासक
- इनके राज्याभिषेक समारोह में जॉन लुडलो भी आये थे
- इन्होंने कन्या वध को रोकने के लिए कठोर आदेश निकाले और इन आदेशों को पत्थरों पर खुदवाकर मारवाड़ के सभी किलो पर लगवा दिए
- अजमेर मेयो कॉलेज की स्थापना (रिचर्ड बार्के ने 1875) के समय 1 लाख रुपये दिये थे।

### ❖ महाराजा जसवंत सिंह द्वितीय –

- प्रधानमंत्री – सर प्रतापसिंह (महारानी विक्टोरिया के स्वर्ण जुबली उत्सव में भाग लेने के लिए 1887 में इंग्लैंड गए थे)
- इनके समय 1883 में महर्षि दयानंद सरस्वती जी जोधपुर आये थे जहां राइका बाग पैलेस में उपदेश दिये तब जसवंत सिंह की प्रेमिका नन्ही जान ने महर्षि दयानंद सरस्वती को जहर दे दिया था, 30 अक्टूबर 1883 को अजमेर में सरस्वती जी की मृत्यु हो गई
- इनके समय जोधपुर में आर्य समाज की स्थापना हुई
- दरबारी कवि मुरारीदान ने यशवंत यशोभूषण ग्रंथ लिखा

### ❖ महाराजा सरदार सिंह –

- अपने पिता जसवंतसिंह की याद में जोधपुर में जसवंत थड़ा का निर्माण कराया जिसे राजस्थान का ताजमहल कहते है
- बॉक्सर युद्ध में मारवाड़ की सेना को चीन भेजा और मारवाड़ के झंडे पर 'चीन 1900' लिखने का सम्मान मिला
- इनके पोलो खेलने के शौक के कारण जोधपुर को पोलो का घर कहा जाता है

### ❖ महाराजा सुमेरसिंह –

- प्रथम विश्व युद्ध (1914–1918) में सेना लेकर फ्रांस गये

### ❖ महाराजा उम्मेदसिंह –

- उम्मेदभवन पैलेस / छीतर पैलेस का निर्माण कराया
- जवाई बांध का निर्माण कराया

### ❖ महाराजा हनुवंतसिंह –

- मारवाड़ के अंतिम शासक

**नोट** – जोधपुर और जैसलमेर के शासको के मध्य पोकरण के अधिकार को लेकर विवाद था जिसका निपटारा शाहजहां के काल में किया गया

## किशनगढ़ के राठौड़

### ❖ महाराजा किशनसिंह –

- मोटा राजा उदयसिंह के पुत्र किशनसिंह ने 1609 ई में किशनगढ़ की स्थापना की
- महाराजा की उपाधि जहांगीर ने दी
- जोधपुर महाराजा सूरसिंह के साथ संघर्ष करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए

### ❖ महाराजा रूपसिंह –

- सामूगढ़ के युद्ध में दाराशिकोह की ओर से युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए
- रूपनगढ दुर्ग (किशनगढ़) बनाया

### ❖ महाराजा मानसिंह –

- इनकी बहन चारूमति से औरंगजेब का विवाह तय था लेकिन मेवाड़ महाराणा राजसिंह ने चारुमती से विवाह किया

### ❖ महाराजा सावंत सिंह (1748 – 1764 ई)–

- राजपाट त्याग कर वृन्दावन चले गए और अपना नाम नागरीदास रख लिया व वल्लभ सम्प्रदाय के अनुयायी बन गये
- इनकी प्रियेसी बणी ठणी (मूल नाम – विष्णुप्रिया) का प्रसिद्ध चित्र मोरध्वज निहालचंद ने बनाया
- सांवतसिंह ने मनोरथ मंजरी, रसिक रत्नावली, देह दशा ग्रंथों की रचना की

# बीकानेर का इतिहास

- शासन – राठौड़ वंश
- कुलदेवी – करणी माता
- प्राचीन नाम – जांगल प्रदेश, राती घाटी

## ❖ राव बीका (1465 – 1504 ई)–

- राव जोधा के दूसरे पुत्र राव बीका ने अपने पिता के ताने से परेशान होकर 1465 ईस्वी में अपने चाचा कांधल व छोटे भाई बीदा के साथ जांगल प्रदेश में राठौड़ वंश की स्थापना की
- करणी माता की आशीर्वाद से राव बीका ने 1488 में नेरा जाट के साथ मिलकर बीकानेर नगर बसाया व बीकानेर को राजधानी बनाया
- बीकानेर की स्थापना अक्षय तृतीया के दिन हुई थी, इस दिन बीकानेर में पतंग महोत्सव मनाया जाता है
- राव बीका ने देशनोक में करणी माता का मंदिर बनाया
- राव बीका ने जोधपुर के शासक राव सुजा पर आक्रमण किया व राजकीय चिह्न छीनकर बीकानेर लाये

## ❖ राव लूणकरण –

- बिठू सूजा के ग्रंथ 'राव जैतसी रो छंद' में इन्हें कलियुग का कर्ण कहा गया है
- कर्मचन्द्र वंशोकीर्ति काव्यम ग्रंथ (रचियता – जयसोम) में इनकी तुलना कर्ण से की है
- लूणकरणसर शहर व झील का निर्माण कराया
- राव लूणकरण ने नागौर के शासक मुहम्मद खां को हराया तथा 1526 में ढोसी के युद्ध में नारनौल के नवाब अबीमीरा से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए

नोट – लूणकरणसर शहर को राजस्थान का राजकोट (सर्वाधिक मूंगफली उत्पादन के कारण) कहते हैं

## ❖ राव जैतसी ( 1526–1542 ई)–

- खानवा युद्ध में अपने बेटे कल्याणमल को भेजा था
- बिठू सूजा राव जैतसी का दरबारी कवि था
- बाबर के पुत्र कामरान ने 1534 ई में भटनेर दुर्ग पर अधिकार कर लिया था तो राव जैतसी ने दुबारा से आक्रमण करके भटनेर को जीत लिया, इस युद्ध का वर्णन बीठू सूजा के ग्रंथ राव जैतसी रो छंद में मिलता है
- पाहेबा / साहेबा (गंगानगर) के युद्ध में राव मालदेव के साथ युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए

## ❖ राव कल्याणमल (1542 – 1574 ई ) –

- अपने पिता जैतसी की मृत्यु के बाद कल्याणमल शेरशाह सुरी के दरबार में चला गया
- गिरी सुमेल युद्ध में शेरशाह सूरी की सहायता की तो शेरशाह सूरी ने बीकानेर का शासक बना दिया
- नागौर दरबार (1570 ई) में उपस्थित होकर अकबर की अधीनता स्वीकार की व अपनी पुत्री का विवाह अकबर से कर दिया और अपने दोनों पुत्रों पृथ्वीराज राठौड़ व रायसिंह को अकबर के दरबार में भेज दिया
- बीकानेर का पहला शासक जिसने मुगलों की अधीनता स्वीकार की

## ❖ महाराजा रायसिंह (1574 –1612 ई) –

- अकबर + जहांगीर की सेवा की
- 1570 में नागौर दरबार में सम्मिलित होकर अकबर की सेवा में चले गये, अकबर ने 4000 का मनसब दिया
- 1572 में अकबर ने रायसिंह को जोधपुर दुर्ग सौंप दिया
- 1574 में महाराजाधिराज की उपाधि के साथ बीकानेर के शासक बने
- 1574 ई में चन्द्रसेन के दमन हेतु मुगल सेना के साथ गये
- 1593 ई बुरहानुल्मुल्क के विरुद्ध दानियाल के थट्टा अभियान में गये इसके अलावा रायसिंह ने काबुल, कंधार, बलूचिस्तान में सैन्य अभियान किया
- अकबर ने 1604 ई में शमशाबाद–नूरपुर की जागीर तथा राय की उपाधि दी, इनकी सेवाओं से खुश होकर जूनागढ़ का प्रदेश भी दिया
- महाराजा रायसिंह राजपूताना में जहांगीर के सबसे विश्वसनीय व्यक्ति थे, जहांगीर ने 5000 का मनसबदार बनाया
- अपने मंत्री कर्मचन्द की देखरेख में जूनागढ़ दुर्ग का निर्माण (1589 – 1594 ई तक) कराया व किले के सूरजपोल द्वार पर जइता से रायसिंह प्रशस्ति लिखाई जूनीराय
- रायसिंह के समय अकाल पड़ा तब इन्होंने जगह – जगह व्यक्तियों के लिए सदाव्रत खोले और पशुओं के लिए चारे–पानी की व्यवस्था की
- मुंशी देवीप्रसाद ने इन्हें राजपूताने का कर्ण कहा राज = राय
- कर्मचन्द्र वंशोकीर्ति काव्यम (रचयिता – जयसोम) में रायसिंह को राजेंद्र कहा गया है

● **पुस्तक –**

रायसिंह महोत्सव, वैधक वंशावली,
बाल बोधिनी, ज्योतिष रत्नमाला

- 1612 ई में बुरहानपुर (मध्यप्रदेश) में मृत्यु हो गई

## ❖ दलपत सिंह –

- महाराजा रायसिंह के बड़े पुत्र दलपत सिंह ने जहाँगीर का विरोध किया तो जहाँगीर ने इनको भटनेर किले में कैद कर दिया, वहाँ इनकी मृत्यू हो गई

## ❖ महाराजा सूरसिंह –

- बीकानेर में सूरसागर झील, सूरमहल का निर्माण कराया

## ❖ महाराजा कर्णसिंह (1631 – 1669 ई) –

- शाहजहां + औरंगजेब की सेवा की
- चिंतामणि भट्ट के ग्रंथ 'शुक सप्तति' में जांगलधर बादशाह कहा गया है
- इन्होंने साहित्य कल्पद्रुम की रचना की
- इनके दरबारी विद्वान गंगानंद मैथिली ने कर्णभूषण व काव्य डाकिनी ग्रंथो की रचना की

## ❖ महाराजा अनूपसिंह (1669 – 1698 ई) –

- दक्षिण अभियान में मराठों के विरुद्ध जीत के बाद औरंगजेब ने इनको माही मरातिब व महाराजा की उपाधि दी
- जूनागढ़ दुर्ग में 33 करोड़ देवी–देवताओं के मंदिर का निर्माण कराया, ये मूर्ति दक्षिण भारत से लाए थे
- उस्ताकला, मथैरण कला का विकास इन्हीं के समय हुआ
- इनका काल बीकानेर चित्रशैली का स्वर्ण काल है
- इनके दरबारी कवि भावभट्ट थे जो अपने ग्रंथों को इन्हीं के नाम पर लिखते थे
- भावभट्ट के ग्रंथ – अनूप संगीत विलास, अनूप संगीत रत्नाकर, संगीत अनूपांकुश, भाव मंजरी
- चुंघेर (अनूपगढ़) की स्थापना की व जूनागढ दूर्ग में अनूप महल व अनूप संस्कृत पुस्तकालय का निर्माण कराया

● रचना – अनूप विवेक, काम प्रबोध, श्राद्ध प्रयोग, चिंतामणि, अनूपोदय

## ❖ सूरतसिंह –

- 1805 ई में मंगलवार के दिन भटनेर दुर्ग पर आक्रमण करके भटनेर को जीतकर नाम हनुमानगढ़ कर देते हैं
- 1814 ई में चूरू पर आक्रमण किया तब चूरू के ठाकुर शिवजी सिंह ने बीकानेर की सेना पर चांदी के गोले चलाये थे
- 1818 में ईस्ट इंडिया कंपनी से संधि कर ली

## ❖ रतनसिंह –

- दयालदास दरबारी कवि था जिसने दयालदास री ख्यात / बीकानेर रा राठौड़ा री ख्यात की रचना की जो राजस्थान की अंतिम ख्यात थी
- सीकर क्रांतिकारी जवाहर जी को शरण दी थी

**बीकानेर शासक सरदार सिंह के समय 1857 की क्रांति हुई व महाराजा डूंगरसिंह के समय बीकानेरी भुजिया का चलन हुआ**

## ❖ महाराजा गंगासिंह (1887 –1943 ई) –

- 1901 ई में चीन में बॉक्सर विद्रोह को दबाने के लिए अपनी ऊँटो की सेना गंगा रिसाला (कैमल कोर) लेकर गये तब अंग्रेजों ने इन्हें 'चीन युद्ध मेडल' खिताब दिया
- छप्पनिया अकाल (1899 ई, विक्रम संवत 1956) में महाराजा गंगासिंह ने जनता के लिए अकाल राहत कार्य चलाया तब अंग्रेजो ने इन्हें केसर ए हिंद की उपाधि दी
- 1913 में महाराजा गंगासिंह ने प्रजा प्रतिनिधि सभा की स्थापना की जो राजस्थान में विधानमंडल की दिशा में उठाया गया पहला कदम था
- बनारस हिंदू कॉलेज को महामना मदन मोहन मालवीय जी ने 1916 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय बनाना चाहा तब बीकानेर महाराजा गंगासिंह ने सर्वाधिक आर्थिक सहायता की
- प्रथम विश्व युद्ध के बाद हुए वर्साय (फ्रांस) के शांति सम्मेलन में भाग लिया

● नरेंद्र मंडल / चैम्बर आफ प्रिंसेज –1921

- ब्रिटेन के राजा सम्राट जौर्ज (पंचम) के शाही फरमान से 1919 में इसका गठन हुआ था
- 1921 में शुरू हुआ जो भारत के राजाओं का संगठन था
- अलवर के राजा जयसिंह ने इसका नाम नरेंद्र मंडल रखा
- प्रथम चाँसलर / अध्यक्ष –महाराजा गंगासिंह (1921–1925)
- स्वशासन की मांग के लिए गंगासिंह ने रोम में अंग्रेजों को एक पत्र लिखा जो रोम नोट के नाम से प्रसिद्ध है
- 1927 में गंगनहर लाये व रामनगर का नाम गंगानगर किया
- गंगासिंह को आधुनिक भारत का भागीरथ कहा जाता है
- तीनों गोलमेज सम्मेलन (लंदन में) 1930, 1931, 1932 में भाग लिया

● निर्माण –

- अपने पिता लालसिंह की स्मृति में लालगढ़ पैलेस बनाया जिसके वास्तुकार स्टीवन जैकब हैं
- देशनोक में करणी माता मंदिर का आधुनिक स्वरूप दिया
- रामदेवरा मंदिर का निर्माण कराया
- गोगामेड़ी मंदिर (हनुमानगढ़) का आधुनिक स्वरूप दिया
- महाराजा गंगासिंह ने अपने 50 वर्ष के शासन पूर्ण करने पर गोल्डन जुबली संग्रहालय का निर्माण कराया जिसका उद्घाटन लार्ड लिन लिथ गो ने किया

## ❖ महाराजा सार्दुल सिंह –

- बीकानेर के अंतिम शासक